अजय अज्ञात

वैसे तो ये ग़लत है मगर मानने लगे
अब ऐब को ही लोग हुनर मानने लगे

देखा नहीं जिन्होंने भी गमलों से कुछ इतर
वे बोनसाई को ही शजर मानने लगे

सच्चाई मुंह छुपाती नज़र आयेगी मियां
झूठे को आप सच्चा अगर मानने लगे

जितना हसीं ज़मीन से दिखता है दोस्तो
सच में नहीं है वैसा क़मर मानने लगे

बीमारियां जो हो रही हैं लाइलाज अब
आलूदगी का है ये असर मानने लगे

परिवार धीरे-धीरे बिखरने लगे तो हम
सूनी इमारतों को ही घर मानने लगे

रहता है उसका ज़िक्र सदा दास्तान में
कहता है बा-कमाल जो सादा ज़बान में

मैं जी रहा हूं दिल में ये उम्मीद पाल कर
आयेगी लौट कर ख़ुशी मेरे मकान में

ख़ुद के ही साथ रहने की फ़ुरसत नहीं मुझे
रहता हूं रात-दिन मैं किसी इम्तेहान में

चारों तरफ़ ही ख़ुशबुओं से भर गई फ़ज़ा
जाने हवा ने क्या कहा फूलों के कान में

कैसे मैं तेरा हो के रहूं ऐ मेरी ग़ज़ल
दुनिया खड़ी है तेरे मेरे दरमियान में

बिन जले चराग़ों से रोशनी नहीं होती
दर्द के बिना यारो, शाइरी नहीं होती

शाइरी में हम से तो मसखरी नहीं होती
झूठ की कभी हमसे पैरवी नहीं होती

ऊँगलियों या होठों का दोष कुछ रहा होगा
बांसुरी कभी यारो,बेसुरी नहीं होती

ख़्वाहिशों का इक पंछी फड़फड़ाता रहता है
आँख बंद कर के भी, बंदगी नहीं होती

जाने कब चटक जाए कांच का खिलौना ये
पत्थरों से शीशे की दोस्ती नहीं होती

सिफ़्र से शुरू हो कर सिफ़्र पे सिमटना है
फिर भी इक तमन्ना है, ख़त्म ही नहीं होती

जाने क्यों हक़ीरी से देखते हैं सब इसको
मौत के बिना पूरी ज़िंदगी नहीं होती

मुद्दतों से गुम हूँ मैं अपनी ही तजस्सुस में
इक तलाश जारी है ख़त्म ही नहीं होती

लोग यूँ ही भरती के क़ाफ़िये मिलाते हैं
हम से तो ग़ज़ल से यूं, दिल्लगी नहीं होती

लोग यूँ ही जलते हैं दूसरों की ख़ुशियों से
हमसे तो 'अजय' ऐसे, ख़ुदकुशी नहीं होती

फरीदाबाद

ISSN:2583-8849